Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor: 4.081
Volume-12, Issue-3, December-2018 www.researchguru.net

रामदरश मिश्र के चयनित उपन्यासों में ग्रामीण चित्रण

निलेश के. पटेल

शोधार्थी एम.फिल.गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद

Email : patelnilesh8673@gmail.com Mo. 9574219493

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद समाज में द्रुतगति से परिवर्तन आया है। परिवर्तन के कई आयाम है जिनमें राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक प्रमुख हैं। देश की राजनीतिक स्थिति–परिस्थितियाँ बदली है। स्वतंत्रता पूर्व राजनीतिक लोग जिन आदर्शों को लेकर जन-जन तक जा रहे थे, लेकिन आजादी के बाद जैसे दी वे सत्ताहीन हुए। उन्होंने उन सभी आदर्शों को भूला दिया, तोड डाला, जिन्हें वे अपनी इच्छा पूर्ति एवं हित साधना में बांधा मानते थे। जल टूटता हुआ, पानी के प्राचीर, उपन्यास में देख सकते हैं।

'रामदरश मिश्र के उपन्यासों' में ग्राम्य जीवन को अपने अध्ययन का विषय बनाया। इस विवेच्य ग्रंथों में सामाजिक विचार, सामाजिक रीत-रिवाज, जाति धर्म मानवता सम्बन्धों का तनाव, आदि छोटी से छोटी बातों का चित्रण किया गया है।

मिश्रजी के उपन्यासों में विशेषकर बाह्य परिस्थितियाँ, जमीदारी, सामंतीप्रथा, ग्रामीण धार्मिक जीवन, श्रमिक मजदूर और विनोद वृत्ति, पूंजीवादी व्यवस्था, विधवा विवाह, वेश्या समाज का चित्रण–संस्कार को प्रकाशित किया है। रामदरश मिश्र के उपन्यासों का वस्तुगत संगठन देखने को मिलता है।।

2.1 'पानी के प्राचीर' (1961)

'पानी के प्राचीर' रामदरश मिश्र का पहला एवं महत्वपूर्ण आंचलिक उपन्यास हैं। इसका प्रकाशन सन् 1961 में हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी से हुआ। आंचलिक उपन्यासों की श्रेणी में आनेवाले इस उपन्यास का हिन्दी साहित्य में विशिष्ट स्थान है। मिश्रजी ने इस उपन्यास में गोरखपुर जिले के राप्ती और गोरा नदियों के प्राचीरो से घिरे कहगर अंचल को प्रस्तुत किया हैं। इस उपन्यास की कथा स्वाधिनता प्राप्ति के एक अभावग्रस्त गाँव पाण्डेपुरवा के द्वारा भारतीय ग्राम्य समाज की प्राभाविक गाथा प्रस्तुत की गई हैं।

उपन्यास में 'पाण्डेपुरवा' गाँव का चित्रण है, जो गरीबी और दरिद्रता से जूझता है। पाण्डेपुरवा गाँव के विषय में लेखक का कथन है कि "पानी के प्राचीर" का कथाचल गोरखपुर जिले में राप्ती और गोराँ नदियां की धाराओ से घरा हुआ एक विशाल भू-भाग है, जो युगों से अपनी सारी हरियाली नदियों की भूखी घाटाओं जो लुटकर केवल विवशता अभाव और संघर्ष के रूप में शेष रह गया है । संस्कार के सारे सूत्रों से कटा हुआ यह प्रदेश अपने आप में एक संसार है, यहाँ न सडके है, न शिक्षा – संस्थाए है, न सुविधापूर्ण डाकखाने है, न सुरक्षा के लिए पुलिस चौकियाँ है, न चिकित्सालय है, न खेतों के सुधार और विकास के लिए कोई सरकारी या

गैर सरकारी व्यवस्था है। यहाँ है – असुज्ञ, गरीबी, व्यापक अशिक्षा, अजगरों की तरह बलखाते दौडते ऊचे नीचे वाले, बीमारी, आपसी कुट और सदियों पुरानी जर्जर नैतिक मान्यताएँ। इस विरान प्रदेश में नेता आते हैं केवल वॉट लेने, सरकारी कर्मचारी आते हैं लोगों को लडाकर अपना उल्लू सीधा करते।"[1]

पानी के प्राचीर अभावग्रस्त गाँव के, संघर्षशील लोगों की जीवन गाथा हैं । उपन्यास का प्रारम्भ होली के पर्व से होता है। होली के प्रसंग के साथ तमाम प्रसंग उभरते हैं। उपन्यास में ग्रामीण जनजीवन का समग्र सामाजिक आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक, शैक्षणिक चित्रण करनें में लेखक को विशेष सफलता प्राप्त हुई है। कथानायक है नीर अर्थात् निरंजन। अन्य महत्वपूर्ण पात्रों में–महेश, बिढीया, संध्या, मुखिया बैजनाथ आदि है। प्रस्तुत उपन्यास में मिश्रजी ने नीढ के द्वारा वर्तमान समाज की सम्पूर्ण व्यवस्था के समानवीयकरण की प्रक्रिया को प्रस्तुत किया हैं।

कथानायक नीरु एक मात्र आशावादी युवक हैं। वह लोगों में परिवर्तन चाहता है। अज्ञानी लोग यह नहीं समझ पातें कि हमें क्या करना चाहिए। परंपरा के घेरे में भी जकडे हुए ये लोग अंधविश्वासों में मानते हैं। नीरु जैसा युवक सत्य के पथ पर चलना चाहता है, लेकिन मुखिया की गंदी राजनीति उसका जीवन बरबाद कर देती हैं। 'उसके मन में सत्य और कल्पनाओं की एक भीड-सी खडी हो गई है। खेत सब मुखिया के पेट में चल गए। घर के समान कस्बे के बनिए ने खा डाले। चारो और कर्ज पहाड रहा है। फिर भी छुटकारा नहीं। गाँव के चारो बदमाशों का दल साजकर मुखिया राजा बना हुआ है। आर्थिक हालात बिगड ने से अनिच्छा से भी नीरु को गजेन्द्रसिंह जैसे बडे जमींदार के यहाँ दो रुपये मासिक वेतन पर नौकरी करती पड़ती हैं। अन्याय और शोषण से लडता हुआ नीरुं जमींदार के यहाँ नौकरी करने से अपने आदर्शो को भूलने लगता है।

जल टूटता हुआ (1969)

'जल टूटता हुआ' रामदरश मिश्र का दुसरा महाकाव्यात्मक आँचलिक उपन्यास हैं, इसका प्रकाशन सन् 1969 में हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी से हुआ है। 'जल टूटता हुआ' का प्रारम्भ स्वतंत्रता दिवस के वर्णन से हुआ है। उस उपन्यास के अन्तर्गत एक विशिष्ट भू-भाग तिवारीपुर गाँव के माध्यम से उभरती हुई भारतीय गाँव की अनुभूति की कहानी हैं।

उपन्यास का प्रारम्भ आजादी के साथ 15 अगस्त के उत्सव से होता है। मास्टर सुग्नन तिवारी प्राइमरी स्कुल के हेडमास्टर हैं। जो कष्टमय आर्थिक परिस्थितियों में अपना जीवन व्यतीत करते हैं। इन्हें कई महीनों का वेतन भी नहीं मिला है, वे आजादी की वर्षगांठ के दिन भी भुखे पेट आते हैं, वे स्कुल की नकली सजावट और बच्चों के चेहरों पर बनावटी

---

[1] मिश्र, रामदरश, पानी के प्राचीर, पृ. सं. 41

खुशियाँ देखते हैं। उनकी नजर बच्चों के चेहरो पर जाती हैं। उन आँखो में अकथ कहानियाँ भरी हुई थी। बाबु महिवसिंह अपने ठाट-बाट से आते हैं, मास्टर सुग्गन तिवारी अपने अरमानों का गला घोटकर भारी हृदय से नकी प्रशंसा करते हैं, उत्तर में महिपसिंह आजादी की रक्षा एंव आपस में प्रेमभाव का उद्देश्य देते हैं।

उपन्यास का यह प्रारम्भ अपने आप में आजादी की वर्षगांठ के माध्यम से कई बातों की और एक साथ संकेत करता है। लेखक अपने जीवन अनुभवों के आधार पर गाँव की गरीबी, पीडा राजनीति पर आक्रोश प्रकट करते हुए आजादी के बाद जमींदारी के खात्मे होने पर भी महीपसिंह जैसे लोग अपने झुठे अहम् पुर अपना अधिकार जताये रहते हैं। गाँव की राजनीति पर अपना अधिकार जताने के लिए राजकीय नेताओ के द्वारा उद्दघाटन समारोह आयोजित किये जाते हैं। महिपसिंह जैसे नेताओं के हाथो में बच्चे को सरकार की और से आई हुयी मिठाईयाँ बाट दी जाती हैं। इस बहाने महिपसिंह जैसे लोग गाँव में अपना झुठा अधिकार बताने का काम करते हैं। 15 अगस्त के इस उत्सव का हमें गाँव की गरीबी एवं गाँव में फैली झुठी राजनीति का भी परिचय मिलता है।

'आकाश की छत' (1979)

1979 'आकाश की छत' डॉ. रामदरश मिश्र का यह सातवाँ उपन्यास है, जो आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है। जिसमें केन्द्रीय पात्र यश के माध्यम से कुछ वर्ष पहले दिल्ली में आयी ऐतिहासिक बाढ़ में घिरे व्यक्तियों और उनके सहायतार्थ नावो में विचरण करते लोगों की मानसिकता यहाँ जैसे एकांकी जीवन जीने वालों के अलगाव बोध और उस सारे परिवेश का यथार्थ अंकन हुआ है। मौत के साये में बीती जिन्दगी की यादो में अपना गाँव, गाँव के लोग, रिश्ते सभी बडी स्वाभाविक्ता से उभरते चित्रित किये गये हैं।

गजपुर गाँव के यश, रामनाथ मइया, बदरी भइया और उनकी माँ और पिताजी संयुक्त परिवार में रहते थे, किन्तुं माँ की मृत्यु के बाद चारो ही रह गये थे। पिताजी टीचर होने के कारण राम भइया और बदरी भइया जो यश से बड़े थे। उनको पढ़ाना चाहते किन्तु वे दोंनो पढ़ने के बजाय बदमाशियाँ करते, चोरी भी करते थे। पिताजी को सबसे छोटे बेटे यश की ज्यादा चिंता थी, क्योंकि यश होशियार था और इमानदार भी । पिताजी यश के बारे में सोचते थे पिताजी को उसे भविष्य की चिंता खाये जा रही थी। वे कभी-कभी उसे (यश) को देरतक देखते रह जाते और उदास होकर कहते क्या होगा मेरे बाद। वे दोनो लंठ बागड़े तुम्हारे साथ क्या सलुक करेंगे। वह उन्हें समझता – चिन्ता न करे पिताजी, सब कुठी ठीक होगा।

गजपुर गाँव के यश और रामनाथ भइया दोंनो में झगडा हो जाता है। यश शिक्षा प्राप्त करने के लिए पैसा चाहता है। परंतु बड़े भाई साहब रमनाथ उसे पढ़ने के लिए पैसे नहीं देते हैं। तब यश अपने खेत बेचकर पढ़ना चाहता है किन्तु खेत भी उसके बडे भाई रामनाथ उसे नहीं देते हैं। तो यश अपनी भाभी से कहता है, देखो रामभइया आसानी से बटवारा नहीं होने देगे और मुझे पढ़ाई के लिए खेत चाहिए, चाहे मुकदमा लड़ना पडे / चाहे कुछ करना पडे।

दोंनो भाईयो में झगड़ा हो जाता है और परिणामतः उनका संयुक्त परिवार का विघटन हो जाता है। यश उच्च शिक्षा प्राप्त कर दिल्ली में बैंक में अफसर बन गया है। खेत बाँटने का रामनाथ का इरादा था किन्तु मजबुरी थी। किसी तरह खेत बाँट दिये गये। दो हिस्से किये गये। एक हिस्सा इसे मिल गया। मकान भी बंद गया लेकिन उसने मकान न लेकर मकान की बगल में बना हुआ बंगला ले लिया। परिवार का विभाजन हो गया।

यश कायर था, परंतु कामरेड जगत के संपर्क में आकर अपने भाई राम भइयो से खेत बाँटकर पढ़ना चाहता है। यश पढने में काफी होंशियार है। राम भइया और बदरी भइया उसके सौतेले भाई है। बदरी यश को पढाना चाहते है, इसीलिए उन्होंने एक जमींदार सेठ के यहाँ नौकरी पकड़ी।

अपने भाई यश का 'यश' देखकर बदरी भइया खुश हो गये क्योंकि यश को अच्छे अंक प्राप्त हुए। जैसे, खा-पीकर निकले तो बदरी भइया उसे लेकर मिठाई की दुकान पर गए और रास्ते भर सबसे कहते गये कि यश पालिसान्टर पास हुआ है। यश अपनी पाँचवी पोलिशन मे पास होने की बात बडे भैया राम से कही उन पर इसका कोई असर नहीं हुआ। उल्टा उन्होंने यश को हताश करते हुए कहा कि "ठीक है, ठीक है, अब तुम पालिसान्टर आओ चाहे कुछ आओ क्या फरक पड़ता है जब खेती-बारी हीं करनी हैं।"[1] राम भइया को मालुम हुआ तो उन्होंने यश को फिर से बडहलगंज के स्कुल में भर्ती करा दिया। 19-20 दिन बाद सीधा – पिसान भी भेज देते हैं। इस तथ्य पर प्रकाश डालते हुए ड़ॉ. विवेकी रायजी अपने ग्रंथ – समकालीन हिंदी उपन्यास में लिखते हैं घर की गरीबी, पिता के स्नेह और भाई के विरोधी व्यक्तित्व आदि का प्रभाव बालक यश पर है। विरोधी स्थितियाँ उसे बराबर सहिष्णु और गतिशील बनाती जाती हैं। घर की प्रतिष्ठा और खुशहाली का सपना देखते पिता चला जाता है। उसका राम भइया उसे बहुत क्रूर निगाहों से देखता है। प्रथम श्रेणी आने पर भी पढाई पर प्रश्नवाचक लगा है। बदरी भइया नौकरी कर पढाई आगे बढाता है। परन्तु दुर्वीपाक से बदरी भईया भी पुलिस की गोली के शिकार हो गये। जब बदरी भईया का छायाछत्र उसके सिर से हट गया तब यश अपने खेत बेचकर पढता रहा।

'बीस बरस' (1996)

'बीस बरस' उपन्यास का प्रकाशन 1996 में हुआ था। यह उपन्यास उत्तरप्रदेश के उस गाँव पर लिखा गया है, जो गाँव ड़ॉ. रामदरश मिश्रजी का है। इस गाँव का आदमी दामोदर दिल्ली में पत्रकार है, जो रियारमेंट के बाद गाँव जाकर रहने के समता पाले हुए है। जब दामोदर बीस वर्ष के बाद गाँव जाते है तो एक नये साये से परिचित होते है कि यह गाँव तो

---

[1] मिश्र, रामदरश, आकाश की छत, पृ.सं. 78

वह गाँव नहीं रहा जिसे वह छोड़कर गया था। लोग अब काफी स्वार्थी, चालाक हो गये है। और चालाकी करने वाले भी वे ही हैं जो दामोदर के बचपन के बाल मित्र थे। इस उपन्यास के माध्यम से मिश्रजी ने गाँव में आये हुए परिवर्तन को समझाने की कोशिश की है, जो पिछले बीस बर्षो में गाँवों में आया है।

जगपति के संयुक्त परिवार में उसकी विधवा पत्नी को और प्रकारान्तर से बडे बेटे की विधवा पत्नी को भी सहारा मिलाये निराश्रित न रही। जग्गु के मृत्यु के बाद उसकी विधवा पत्नी की परवरिश करते हुए बेटा विधवा माँ को धीरज दिलवाता है - 'जग्गु तो बीमार चल ही रहे थे, एक दिन मर गये। बच्ची बेवारी गरीब विधवा औरते और भजुरामा। माँ रो-रोकर हलकान हो गयी। भजुरामा ने माँ से कहा, माई तु चिन्ता मत कर। भइया तो मुँह चुरा कर भाग गये, मैं हु ना, भजुरामा का बड़ा भाई शिवरामा घर से भागकर फौज में भरती हो गया था। मेट्रिक पास भी हो गया, वहाँ उसने बी.ए. पास ड्रायवर की लड़की से शादी भी कर ली। आगे चलकर इस परिवार पर वज्रपात हुआ। शिवराम की लडाई में मृत्यु हो गयी। परिणामतः विधवा को आश्रय भी मिला और लोगों के ताने-बाने भी बंद हो गये। उन्हों ने कचहरी में शादी भी कर ली। भजुराम और विधवा भौजी के संवादो से प्रतीत होता है-

निष्कर्ष

अतः डॉ. रामदरश मिश्र बीतीचती पीढी के अग्रणी उपन्यासकारों में अपना विशिष्ट स्नान रखते हैं। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य को जिन उपन्यासकारों ने दिशा दी और समुदय किया उनमें भी डॉ. रामदरश मिश्रजी का महत्वपूर्ण ज्ञात हैं। मूलतः उनके उपन्यासो में नये मूल्यों के अन्वेषण की छटपटाहट द्रष्टिगोचर होती हैं। आरंभ में डॉ. रामदरश मिश्र गांधीवादी नजर आते हैं।

मिश्रजी ने उपन्यास साहित्य का सृजन परिवार और पारिवारिक संबंथ तथा संघर्ष को केन्द्र में रखकर किया है, जो सामाजिक जीवन के समीप तथा यथार्थ जीवन के निकट।

रामदरश मिश्र ने अपने कथा-साहित्य द्वारा ग्राम्य – जीवन की सभी बुनियादी समस्याओं की और हमारा ध्यान आकर्षित किया है। वस्तुतः दुरदाण के क्षेत्रो में प्रकृति की गोद में बसे हुए हमारे गाँव आज की सामाजिक, आर्थिक, एवं शैक्षिक दृष्टि से काफी पिछडे हुए है, अब भी यहाँ अज्ञान एवं अशिक्षा की कुंचल में अंधविश्वासो व रुढियों के साथ कुंडली मारे बैढे है, जो फन उठाकर यहाँ की मूल आत्मा को कुंचल रहे हैं। एक संवेदनशील रचनाकार होने के कारण रामदरश मिश्रजी की मान्यता है कि जब तक गाँवो में शिक्षा का व्यापक प्रचार-प्रसार नहीं हो जाता तब तक गाँव की आत्मा इसी प्रकार कुंचली जाती रहेगी और शोषण की संस्कृति के नाम पर आर्थिक वैषम्य, जातिवाद एवं भ्रष्टाचार जैसे कृत्सित तत्वों को प्रक्षेप मिलता रहेगा। अतः आवश्यक्ता इस बात की है शिक्षित कहलाने वाले गाँवों को पहचानने के लिए उनसे संवेदनात्मक स्तर पर जुड़े तभी हमारे गाँव सही अर्थ में राष्ट्रीय धारा से जुड़ सकते हैं।

संदर्भ संकेत

क्रम	**पुस्तक का नाम**	**लेखक का नाम**	**पृ.नं.**
1.	पानी के प्राचीर	रामदरश मिश्र	**41**
2.	पानी के प्राचीर	रामदरश मिश्र	**163**
3.	जल टूटता हुआ	रामदरश मिश्र	66
4.	जल टूटता हुआ	रामदरश मिश्र	178
5.	आकाश की छत	रामदरश मिश्र	28
6.	आकाश की छत	रामदरश मिश्र	78
7.	बीस बरस	रामदरश मिश्र	62
8.	बीस बरस	रामदरश मिश्र	64